r`rh; v/;k;

O;kikj ,oa okf.kT;

okf.kT; ,oa O;kikj के विकास के लिए सामान्यत खनिज सम्पदा, कच्चा माल, सस्ता श्रम और पूँजी की आवश्यकता होती है। मेवाड़ में उपर्युक्त स□ बातें उपलब्ध थी और अठारहवीं सदी के अन्त तक स्थानीय उद्योग–धन्धे विकसित अवस्था में थे।[1] स्थानीय उद्योग–धन्धों के लिए आवश्यक कच्चे माल की अधिकांश पूर्ति स्थानीय खानों तथा कृषि उत्पादों से हो जाती थी। बाहर से बहुत कम मात्रा में कच्चा माल आयात किया जाता था। परन्तु उन्नीसवीं सदी के मध्य तक अ□क, संगमरमर, और इमारती पत्थर के अलावा अन्य खनिजों का उत्खनन कार्य बन्द हो गया था।[2] कर्नल हैंडले[3] और कप्तान ब्रुक ने इसके लिए दो कारणों का उल्लेख किया है– (1) खनिजों की खपत के लिए आवश्यक उद्योग का अ□व और (2) यूरोप से आने वाली सस्ती वस्तुए। खनिज उत्खनन बन्द हो जाने के परिणामस्वरूप राज्यों को आर्थिक हानि तो उठानी ही पड़ी साथ–साथ रोजगार के साधन सीमित हो गए और सर्व साधारण पर इसका व्यापक प्र□व पड़ा।

esokM+ {ks= esa m|ksx&/kU/kksa dk og vk/kqfud Lo:i miyC/k ugha Fkk tks vkt ns[kk tkrk gSA m|ksx&/kU/kksa dk vfHkizk; mu dqVhj rFkk gLr&f'kYi m|ksxksa ls gS tks rRdkyhu le; esa lekt dh ewyHkwr vko';drkvksa dh iwfrZ djrk FkkA esokM+ ds tu&thou

esa ;s m|ksx&/kU/ks lekt dh tkfr;ksa rFkk oa'kkuqxr fLFkfr;ksa ij vk/kkfjr FksA xzkE; f'kYih yksx d`f"k ,oa xzkE;thou dh vko';drkvksa ds fy, m|ksx djrs FksA bu f'kfYi;ksa dk vkfFkZd thou d`f"k ij vkfJr gksrk FkkA oLrqr% xzkE; f'kYih v)Z d`"kd vkSj lk/kkj.k f'kYih dk thou O;rhr djrs FksA uxj ds f'kYih dq'ky f'kYih dh Js.kh esa vkrs FksA[4]

रोजगार और सम्पन्नता की दृष्टि से उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के मेवाड़ में उद्योग–धन्धों की तीन श्रेण्याँ थीं – एक श्रेणी उन उद्योग–धन्धों की थी जिनका उत्पादन स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति तक ही सीमित था जैसे कि सूतली–रस्सी, टाटपट्टी उद्योग, काष्ठ उद्योग, मिठाई उद्योग इत्यादि। दूसरी श्रेणी उन उद्योग–धन्धों की थी जिनके उत्पादन का स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद राजस्थान के अन्य राज्यों में □ निर्यात किया जाता था मोटा सूती उद्योग, ऊनी वस्त्र उद्योग, कागज उद्योग आदि। तीसरी श्रेणी के उद्योग–धन्धों के उत्पादों का राजस्थान के बाहर □ निर्यात किया जाता था जैसे–नमक उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, संगमरमर उद्योग इत्यादि। शराब उद्योग, तेल उद्योग, काष्ठ उद्योग, बुनाई उद्योग, मूँज उद्योग, चमड़ा उद्योग आदि ग्रामीण श्रेणी के उद्योग □ शामिल थे जबकि वस्त्र उद्योग, मीनाकारी, पत्थर उद्योग, गन्ध द्रव्य उद्योग, चूड़ी उद्योग तथा कागज उद्योग आदि शहरी उद्योगों की श्रेणी में थे।

iqu% thfodk ds vk/kkj ij ;s f'kYih nks miJsf.k;ksa& Jfed f'kYih rFkk O;olk;h f'kYih esa oxhZd`r FksA Jfed&f'kfYi;ksa esa Hkou fuekZ.k djus okys feL=h] dkjhxj vkfn diM+ksa dh flykbZ djus okys efgnkst] diM+k jaxus okys jaxjst] dkxt cukus okys dkxnh] lksuk&pkanh ds cjd cukus okyss] diM+ksa dh NikbZ djus okys Nhik] crZu x<+us okys dlkjk bR;kfn tkfr ds yksx izeq[k FksA O;olk;h f'kfYi;ksa esa lqukj] yqgkj] lqFkkj] dqEgkj] nthZ] th.kxj] iVok] mLrk dyky vkfn tkfr;ka FkhaA[5] f'kYih f'kYixr vkokl ls Li"V gksrs FksA f'kYih lewgksa ds vuqlkj esokM+ esa eq[;r% m|ksx fuEu Fks &

oL= m|ksx

राजस्थान अपने चमकीले बहुरंगी वस्त्रों के लिए प्राचीन काल से विख्यात रहा है। यहाँ के वस्त्र वै□ का उल्लेख समकालीन ग्रंथों में □ हुआ है और विश्व के कई संग्राहालयों में यहाँ के रंगीन एवं छपे हुए वस्त्र सुरक्षित हैं। जिन्हें देखकर आज का तकनीकी विशेषज्ञ □ दंग रह जाता है कि कैसे मात्र कुछ फल–फूल, छिलके आदि से राजस्थान के छीपें, रंगेरज तथा नीलगर ऐसी दुर्ल□ रंगते बना लेते थे। सबसे अधिक विविधता लाल रंग में मिलती है, इसकी रंगतों की गिनती कठिन है। इसलिए कहा गया है–

'मारू थारे देश में उपजै तीन रतन,

इक ढ़ोला, दूजी मारवण तीजो कसूमल रंग।।'

सूती वस्त्र उद्योग

राजस्थान में उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान घर–घर में करघे चलते थे। बुनकर करघे पर वस्त्र तैयार करते थे और लोग अपनी आवश्यकतानुसार उन्हें खरीदते थे। इन्हीं में से कुछ वस्त्र बहुत प्रसिद्ध हुये और उनकी प्रसिद्धि दूर–दूर तक फैल गई जिनका साहित्यिक कृतियों में □ उल्लेख मिलता है–

कवि प्रयागदास कहते हैं–

'टुकड़ी रूपईआ गजतणी सुन्दर रहे न सुहाय।

पितम महुगा मोलरी, सौ दियौ मुखल्याय।।[6]

इस दोहे में उल्लेखित 'टुकडी' मेवाड के देशी कपड़ों में सर्वोत्तम गिनी जाती थी। राजस्थान राज्य अ□लेखागार, बीकानेर में समकालीन संग्रहीत रिकोड्स से ज्ञात होता है कि यहाँ के शासक इन उद्योगों को आश्रय देते थे और उनसे सम्बद्ध छोटी से छोटी सुविधा का ध्यान रखते थे। किसी प्रकार की कठिनाई होने पर छीपें और रंगरेज सीधे महाराजा को पत्र लिख सकते थे और उनकी सुनवाई □ होती थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में राजस्थान में वस्त्र–उद्योग को संरक्षण देने वालों में कोटा राज्य के दीवान झाला जालिमसिंह का नाम अग्रणी है। उन्होंने न केवल कोटा राज्य में स्थानीय वस्त्र उद्योग को संरक्षण दिया बल्कि उसके विकास में भी महत्त्वपूर्ण □ूमिका नि□ाई। वस्त्र उद्योग के प्रमुख केन्द्र चन्देरी (मध्यप्रदेश) से उन्होंने अनेक बुनकरों को कोटा राज्य में आमंत्रित किया और उन्हें वि□ेष सुविधाएँ और रियासते प्रदान की। फलस्वरूप वे स्थाई रूप से

कोटा में बस गये। स्थानीय दस्तकारों ने उसने कपड़े की उत्कृष्ट छापाई और कपड़े तैयार करने की डिजाइन व प्रारूप सीखे। राजस्थान में छपाई के कार्य को विकसित करने का श्रेय गुजराती दस्तकारों को जाता है जो सन् 1750 के लग□ा जयपुर के समीप सांगानेर कस्बे में आकर बस गये थे। धीरे–धीरे आस–पास के गाँवों से □ दस्तकार आकर सांगानेर में बस गये थे। दस्तूर कौमवार संख्या 23 में उल्लेख है कि थमनदास और दूसरे अनेक दक्ष दस्तकार गुजरात से आकर स्थाई रूप से जयपुर में बस गये थे जिनके द्वारा उन्नत किस्म की मलमल और फाब्ता नामक वस्त्र जयपुर में तैयार किया जाता था।[7] जयपुर से इन कपड़ों का निर्यात मथुरा, अहमदाबाद, बम्बई, दिल्ली व बनारस आदि को □ होता था।

xzkeks|ksx ds :i esa izR;sd xkao esa p[ksZ }kjk lwr dkrus vkSj eksVs lwrh diM+s ¼jstk½ dh cqukbZ dk dke fd;k tkrk FkkA eqfLye tkfr ds tqykgk diM+s dh cqukbZ djrs Fks fdUrq ;g m|ksx eksVs lwrh diM+k m|ksx foLr`r Lrj ij izpfyr ugha FkkA esokM+ ds e/oorhZ ,oa iwohZ&nf{k.k Hkkx esa dikl dk mRiknu gksus ds dkj.k ;g {ks= lwrh oL= dk izeq[k dsUnz FkkA[8] ixfM+;ka] ygfj;k dh NikbZ vkSj jaxkbZ cgqewY; diM+ksa ij lksus&pkanh ds rkj rFkk js'ke ds /kkxksa }kjk d<+kbZ dk m|ksx mn;iqj dh fo'ks"krk FkhA ;g m|ksx eqfLye tkfr ds jaxjstksa] Nhikvksa rFkk fgUnw

iVok yksxksa }kjk fd;k tkrk FkkA NikbZ dk dke ydM+h ds Cykdksa }kjk gksrk Fkk ftudk fuekZ.k f'kYih lqFkkj djrs FksA xksVs fdukjh ds O;olk; ij ikj[k tkfr ds czkã.kksa dk ,dkf/kdkj FkkA

1880 bZ- esa jkT; }kjk okf.kT; O;kikj ds izeq[k dsUnz HkhyokM+k esa dikl rFkk Åu dk dkj[kkuk LFkkfir dj vkS|ksfxd {ks= esa uohu iz;kl izkjEHk fd;k x;kA fdUrq bleas jkT; dks bldh vFkZO;LFkk ds ifj.kkeLo:i ?kkVk jgkA vr% 1887 bZ- eas bls cEcbZ dh dEiuh dks 40 gtkj :i;s esa csp fn;k x;kA[9] dEiuh }kjk dkj[kkus esa vksVus ds lkFk&lkFk xkaB cka/kus dh e'khus yxk dj bldk foLrkj fd;k x;kA 1898 bZ- esa dEiuh us ;g dkj[kkuk iqu% jkT; dks foØ; dj fn;kA bl izdkj O;fDrxr m|ksx {ks= jkT; m|ksx {ks= esa vkus ls blds mRiknu dk ykHk jkT; dks izkIr gksus yxk FkkA[10]

dk"B m|ksx

घरेलू और ग्रामीण उद्योग–धन्धों में काष्ठ उद्योग का स्थान काफी महत्त्वपूर्ण था। अधिकांश कृषि उपकरण लकड़ी के ही बने होते थे। मकानों के निर्माण में भी काष्ठ उद्योग का महत्त्वपूर्ण स्थान था खाटें, फर्नीचर, साज–सज्जा का सामान लकड़ी से बनाया जाता था। उदयपुर के कारीगर लकड़ी की चूड़ियाँ बनाने में दक्ष थे।[11]

राजस्थान में बस्सी अपनी काष्ठकला के लिए विख्यात रहा है। यह चित्तौड़गढ़ से बूँदी कोटा ब्रॉड गेज रेलवे लाइन तथा चित्तौड़–बूँदी पर्यटन राजमार्ग पर चित्तौड़ से 20 किलोमीटर दूर स्थित घने वनों से आच्छादित रहा है। प्र□ित जी सुथार को यहाँ की काष्ठ कला का जन्मदाता माना जाता है। यहाँ के शासक रावत गोविन्द दास जी 1652 में दिल्ली से लौटते समय प्र□ित जी सुथार को साथ ले आये थे और यहाँ उन्हें रहने के लिए मकान बनवा कर दिया जिसे आजकल 'बड़ी गवाड़ी' कहते है। इसके अतिरिक्त कृषि, पशुपालन के लिए उसे 80 बीघा जमीन प्रदान की जिसे 'थरमामाल' कहते है। मेवाड़ के महाराणा सज्जनसिंह, फतहसिंह तथा □पाल सिंह जी ने □ बस्सी के कलाकारों को प्रोत्साहन दिया।

बस्सी के कलाकार कावड़, बेवाण, कठपुतली, बाजोट, मुखौटे आदि काष्ठ की कृतियाँ बनाने में सिद्धहस्त थे। यहाँ के कलाकार हाथी के हौदों, सिंहासन, झूले, रथ व फर्नीचर पर आकर्षक कुराई करते थे और चाँदी व धातु की परत चढ़ाकर उसे अप्रतिम रूप प्रदान करते थे।

राजस्थान में कावड़ रामायण, महा□रत, □गवद्गीता एवं कृष्णलीला आदि कथाओं के प्रचार–प्रसार का सशक्त माध्यम रही है। लकड़ी की बनी कावड़ आठ, दस और बारह पृष्ठवाली चित्रकथा होती थी जिसमें पौराणिक चित्र अंकित होते थे। आज □ यह कला जीवित है। गायक लकड़ी की कावड़ को कन्धे पर रखकर गाँव–गाँव में घूमकर इकतोरे पर चौपालों में कथा वाचन का काम करते थे।

esokM+ dk 1@3 Hkw&Hkkx oukPNkfnr FkkA vr% ydM+h dh n`f"V ls lhle] lkxoku] vke] ccwy] ckl vkfn ds o`{k cgqrk;r esa FksA bu isM+ksa dh ydfM+;ksa ls d`f"k midj.k] edkuksa dh f[kM+fd;ksa fdokM+ksa] ydM+h ds crZu vkfn cukus vkSj muesa [kqnkbZ rFkk uDdk'kh dk dke lqFkkj f'kfYi;ksa }kjk fd;k tkrk FkkA mn;iqj esa O;okl;h f'kfYi;ksa }kjk ydM+h ds dykRed f[kykSus o pwfM;ksa cukbZ tkrh FkhA[12] HkhyokM+k] tgktiqj vkSj 'kkgiqjk esa Hkh lqUnj f[kykSus rFkk ikWfy'k dk dke fd;k tkrk FkkA f[kM+fd;ka] egjko LrEHk Hkh esokM+ ds dk"V m|ksx dh dykiw.kZ lk{; orZeku esa fo|eku gSA

yqgkjh vkSj peZdkjh m|ksx

प्रत्येक गाँव में यह उद्योग फला–फूला क्योंकि चमड़ा उद्योग में संलग्न चमार या मोची जाति के लोग हर गाँव में निवास करते थे।[13२९] इस वर्ग द्वारा जूतियाँ, तलवार की मियान, घोड़े की जीन, लगाम, किताबों की जिल्द, चमड़े की चड़स, पानी पीने का पात्र डिलड़ा (ये पात्र पशु चराने वाले ग्वाला अपने साथ रखते थे जिसमें पानी ठंडा रहता था।) तेल के लिए कुप्पी आदि बनाये जाते थे।[14] चड़स का उल्लेख तो बाबर ने □ अपनी आत्मकथा में किया है। उन्नीसवीं शताब्दी के कोटा रिकोडर्स में □ पानी खींचने के लिए उपयोग में आने वाले इस चड़स का उल्लेख मिलता है।[15]

दस्तूर कौमवार संख्या 23 में उल्लेख आया है कि दौला नामक मोची जयपुर में घोड़े की जीन (काठी) बनाने में सिद्धहस्त था।[16] कोटा रिकोड्स से ज्ञात होता है कि बलाई जाति के लोग □ चमड़े की वस्तुएँ बनाते थे। कोटा रिकोड्स में ही एक बलाई को मेहनताने स्वरूप एक रुपया दिये जाने का उल्लेख मिलता है।[17]

xzkE; cLrh esa d`"kdksa ds fy, ykSg midj.kksa esa gy] dqnky] uhjkbZ&xqMkbZ djus dh [kkai vkfn ds lkFk&lkFk ?kjsyw lkeku] ;Fkk& fpeVk] lkdy] nrqyh] pkdw vkfn cukus dk dk;Z xzkE; yqgkj] pekj ,oa ?kqeDdM O;olk;h tkfr ds xkMwfy;k yqgkj djrs FksA uxj esa ykSg o peZ&f'kyi dk dke fdlyhxj] th.kxj] eksph vkfn }kjk fd;k tkrk FkkA mn;iqj esa ryokj] [katj&Nqjh] dVkjh] Hkkys] <ky] gkFkh&?kksMsa rFkk ÅaVksa dh th.k ;k dkBh cukus dk f'kYi O;olk; izfl) FkkA[18]

crZu m|ksx

गाँवों में मिट्टी के बर्तन बनाने का व्यवसाय □ अस्तित्व में था। कुम्हार जाति के दस्तकार इस व्यवसाय से अपनी रोजी–रोटी कमाते थे। राजस्थान के हर गाँव और कस्बे में कुम्□कार वर्ग का निवास था।[19] कुम्हार बर्तन बनाने के लिए चाक का प्रयोग करते थे। वे चाक पर मिट्टी से अपने हाथ के हुनर का प्रयोग कर सुन्दर मटके, दीपक, कलश, हांडी, कुन्डा, तावणी, तेल व घी रखने के पात्र, तवा, सराई, करी, सुराही, गुल्लक, तम्बाकू

पीने की चिलम एवं सूलपी आदि बनाते थे। कुम्हार टैराकोटा या मिट्टी के खिलौने □ बनाते थे। नाथद्वारा के पास मोलेला के कुम्हार इस कार्य में पारंगत थे।[20] कोतवाली चबूतरा जमाबंदी बही सं. 753 में जालौर के जयसिंह व जोधा नामक कुम्हारों के नाम का उल्लेख मिलता है जो अपने कार्य को करने में सिद्धहस्त थे।[21] इसी बही में राजकीय आवश्यकता के लिए खरीदे गये बर्तनों के लिए 13 रुपये मूल्य अदा करने का □ उल्लेख मिलता है।[22] बर्तनों के अलावा कुम्हार वर्ग खपरेल (कोल्हू) □ बनाते थे। कोल्हू से कच्चे घरों की छत को ढका जाता था। कोटा रिकोडर्स में खपेरल (कोल्हू) के विक्रय के अनेक विवरण मिलते हैं।[23]

कुम्हार मिट्टी के साथ एक चौथाई गोबर मिलाकर उसे जमीन पर थापते थे। फिर हाथ और साधारण औजार से ही उस पर वीर पुरुष, देवता, देवियों, नागों, □रेव, काली आदि की आकृतियाँ उ□रेते थे। एक सप्ताह तक सूखने के बाद आग में इन्हे पकाकर गैरू रंग कर देते थे। इस प्रकार तैयार सुन्दर हस्तशिल्प की वस्तुओं और प्रतिमाओं की काफी माँग थी। आज टेरीकोटा की इस कला को देश–विदेश में मान्यता मिल चुकी है।

izR;sd cLrh esa dqEgkj tkfr ds f'kfYi;ksa }kjk LFkkuh; vko';drkvksa dh iwfrZ gsrq feV~Vh ds crZuksa dk fuekZ.k fd;k tkrk jgk FkkA fdUrq mn;iqj] diklu vkfn LFkkuksa ij feV~Vh ds dykRed crZuksa dk m|ksx fo|eku FkkA jkT; esa ckal mRikn gksus ds dkj.k ckal ds crZuksa dk Hkh izpyu FkkA ckal dk dke

gfjtu tkfr ds yksx djrs FksA buds }kjk Vksdfj;ka] Nkt] vkfn dk nLrdkjh fd;k tkrk FkkA ykSg [kku ls izkIr yksgs }kjk gekenLrk rFkk rxkfj;ka cukus dk dke gksrk FkkA[24] HkhyokM+k esa rkack] ihry rFkk dkalk uked fefJr /kkrq ds crZu cukus dk dk;Z dlkjk tkfr ds yksx djrs FksA mn;iqj esa ihry rkack crZu ds lkFk&lkFk lksfu;ksa }kjk lksus&pkanh ds Fkky] dVksjs] fxykl] yksVs] rjckus vkfn cuk;s tkrs FksA 19oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z esa jsy ;krk;kr ds fodkl Lo:i dkalk ds crZuksa dk fu;kZr fd;k tkus yxk FkkA fu;kZr dh vkSlru ek=k dk dksbZ izek.k izkIr ugha gksrk gSA fdUrq esokM+ dh lEiw.kZ fu;kZr&fLFkfr dh n`f"V ls dgk tk ldrk gS fd blesa jkT; dks dksbZ vf/kd ykHk ugha FkkA

vkHkw"k.k ,oa d<+kbZ m|ksx

mn;iqj eas dykRed vkHkw"k.k cukus rFkk muesa uxhuksa dh tM+kbZ dk dke lksuh rFkk tfM+;k yksx djrs FksA blh izdkj ryokjksa] dVkfj;ksa dh ewBk ij yxs lksus&pkanh esa tMkbZ o [kqnkbZ dk dk;Z tfM+;ksa vkSj fldyhxjksa }kjk fd;k tkrk FkkA[25] ukFk}kjk ehukdkjh dk;Z ds fy, izfl) FkkA ;gka dh ehukdkjh dh

oLrq,a /kkfeZd ;k=h yksx Ø; djrs FksA bl izdkj bldk vizR;{k fu;kZr gksrk FkkA

vU; m|ksx

mijksDr m|ksx&f'kYi ds vfrfjDr pwMh] b=] ewfrZ ,oa fp=dkjh] dkxt rFkk 'kjkc cukus ds m|ksx jkT; esa fo|eku FksA mn;iqj vkSj HkhyokM+k esa gkFkhnkar] yk[k vkSj ukfj;y dh pwfM;k] dksBkfj;k esa eksecŸkh cuk;k tkrk FkkA nsox<+ esa dEcy cukus fj[kcnso esa iRFkj dh ewfrZ;ka] ukFk}kj vkSj mn;iqj esa HkhfŸk fp= ,oa dyedkjh m|ksx izpfyr FkkA[26] dkxt xqtjkr ls vk;kr fd;k tkrk Fkk fdUrq esokM+ esa ?kkl dh xqnk ckal] diM+ksa dks lMkdj ysi rS;kj dj eksVk dkxt cukus dk m|ksx FkkA[27] ,slk dkxt cukus okys ^dkxnh* dgykrs FksA dsyok fpŸkkSM+ esa lksjxjksa }kjk ck:n cukus dk m|ksx yxk;k x;k FkkA 18oha 'krkCnh dh d`fr okjk.klh foykl esa lkcqu ds iz;ksx dk mYys[k feyrk gSA 19oha 'krh esa mn;iqj rFkk Hkh.Mj esa ns'kh lkcqu cukus ds x`g m|ksx izpfyr FksA[28] dyky tkfr }kjk jkT; esa eq[;r% egqvk] ds'kj rFkk xqykc dh 'kjkc

cukbZ tkrh FkhA blh izdkj [kfut m|ksx Hkh jkT; esa izpfyr jgk FkkA

esokM+ jkT; esa egyksa ds iz'kkluk/khu dbZ dkj[kkuksa esa f'kYi m|ksx dk dk;Z fd;k tkrk FkkA 'kklu }kjk csxkj esa vFkok osru&etnwjh ij dq'ky rFkk lk/kkj.k f'kfYi;ksa ls dkj[kkuksa esa dke fy;k tkrk FkkA dkj[kkuksa ls mRiknu fd;k x;k eky jkT; ds egy ,oa tukuk egy esa jgus okyksa ds fy, iz;qDr fd;k tkrk FkkA[29] buesa eq[;r% iRFkj&uDdk'kh] ewfrZ f'kYi] fp=dkjh] oL= flykbZ] Lo.kZdkjh] vkHkw"k.k tM+kbZ] ikydh Mksyh] uko] vkS"k/kh vkfn cuk;s tkrs FksA

esokM ds m|ksx izk;% dqVhj xzkeks|ksx dh Js.kh esa jgs FksA vr% vkRefuHkZj vkfFkZd O;oLFkk ds vuq:i bu m|ksxksa dk foLrkj jkT; dh ekax rFkk iwfrZ rd lhfer jgk FkkA ;|fi 19oha 'krkCnh ds vfUre n'kdksa esa ns'k ds iwohZ Hkkx esa rFkk e/;orhZ Hkkx esa jsy ykbu cu tkus ds QyLo:i HkhyokM+k ,oa mn;iqj ds dkals ds crZu] :bZ] gfFk;kj] i'kqvksa dh [kky] dkLV] f[kykSus NikbZ o diMs vkfn dk fu;kZr izkjEHk gksus yxk FkkA ijUrq bl fu;kZr dh ek=k de gksus dh otg ls LFkkuh; m|ksx ds fodkl rFkk

mUufr izHkko ugha iM+k FkkA esokM+ dh HkkSxksfyd fLFkfr ds vuqlkj ;krk;kr dh lqxe vuqifLFkfr esa dPps eky dk vk;kr rFkk fufeZr eky dk fu;kZr nq"dj dk;Z FkkA blds LkkFk&lkFk tulk/kkj.k dk lkns thou esa fo'okl rFkk oSKkfud rF;ksa ds izfr 'kkldh; v:fp esokM ds vkS|ksfxd fiNMsiu ds dkj.k FksA[30] ;|fi 20 oha 'krkCnh ds iwoZ esa jsy vkSj lM+d ekxksZa dk fuekZ.k gks pqdk Fkk fdUrq vkRefuHkZj vkfFkZd O;oLFkk vkSj xzkE; okrkoj.k ds izHkko ls eqDr ugha gks ldk FkkA[31]

vfHkys[kksa ls fofnr gksrk gS fd lk/kkj.k f'kYih dk nSfud ikfjJfed izk;% 4 vkuk ls 6 vkuk vFkok 1 lsj vkVk 1@2 iko nky rFkk dq'ky f'kfYi;ksa dks 8 vkuk ls 13 vkuk ;k 2 lsj vkVk] vk/kk iko nky] NVkd chMh rEckdw rFkk 2 :i;s ls pkj :i;s ekgokjh fn;k tkrk FkkA jkT; d`ik&ik= f'kfYi;ksa dk vkfFkZd Lrj tu&lk/kkj.k f'kfYi;ksa dh vis{kk vPNk jgk FkkA mUgsa jkT; dh vksj ls 20 ls 60 :i;s ekg fljksiko rFkk buke esa [ksrh dh tehu rd iznku dh tkrh FkhA[32] dbZ ckj f'kYi&'kqYd ugha pqdkus dh voLFkk esa f'kfYi;ksa ls jkT; }kjk f'kYi dk dk;Z djk;k tkrk FkkA

okf.kT; ,oa O;kikj

cfLr;ksa esa ftl izdkj f'kYi lewg Fks mlh izdkj of.kd lewg fHkUu&fHkuu eqgYyk esa vofLFkr jgrs FksA of.kdksa ds O;olk; dh n`f"V ls fuEu oxZ fd;s tk ldrs gSa& 1- xzkE; of.kd] 2- uxj of.kd rFkk cksgjk ;k lkgwdkjA cksjkxr O;kl; djus okys oS'; egktu vFkok vU; lEiuu f}t tkfr ds O;fDr xzke of.kd rFkk uxj of.kd ds e/; dh dMh gksrs FksA tgka muds }kjk xkaoksa esa m/kkj ysu&nsu rFkk eky Ø;&foØ; dk /ka/kk djrs Fks ogka uxj okf.kT; dh vko';drk iwfrZ gsrq xzkE;&Hk.Mkj ls eky dks eaMh esa Fkksd esa foØ; djrs FksA fdlku f'kYih rFkk vU; lsod oxZ ls bu cksgjksa dk vkfFkZd lEcU/k oLrq vFkok udn ds ikjLifjd fofue; ij vk/kkfjr gksrk FkkA bl izdkj cksgjk O;kikjh xzkeh.k iztk ds fy, cSad rFkk eaMh eky ds eq[; laxzgdŸkkZ ,oa forjd FksA cgqr xzke o uxj dh eafM;ksa esa xzke of.kdksa ls eky dk lkSnk cksgjksa dks NksM+ dj izR;{k Hkh fd;k tkrk Fkk] ,slk eky xzke Hk.Mkj ;k d`"kd ds ?kj gh iM+k jgus fn;k tkrk vkSj vko';drk vuq:i eaxok;k tkrk FkkA vPNh fLFkfr okys d`"kd vFkok tkxhjnkj viuh mit dks lh/ks eaMh }kjk foØ; djrs FksA blls mu ij xkao

nykyh dk Hkkj ugha iM+rk FkkA e.Mh esa nyky yksxksa }kjk d`"kd dk eky cksyh yxkdj vk<fr;ksa dks cspk tkrk FkkA nyky dks bl ifjJe gsrq eky ds ewY; dk 4 ls 6 izfr'kr nykyh izkIr gksrh FkhA[33] vr% ;s fdlkuksa ds eky dks vius ykHktu ds fy, Åaph cksyh ij csprs FksA tkxhjnkjksa {ks=ksa esa oLrq&fofu;e izFkk ds dkj.k nykyh O;olk; dk vf/kd izpyu ugha FkkA jkT; }kjk nykyksa dks nykyh iV~Vs fn;s tkrs Fks ftu ij okf"kZd 'kqYd vken ds vuqlkj fy;k tkrk FkkA oxSj jkT;kuqvkKk i= ds dksbZ O;fDr nykyh ugha dj ldrk FkkA blh izdkj ds vuqKk iV~Vs e.Mh {ks=k/khu vyx&vyx okf.kT;&O;kikj lewgksa dks iznku fd;s tkrs FksA bu lewgksa esa vfHkys[k fjdkMksZa ds vuqlkj rEckdq] rsy] xqM] dks;yk] fdjk.kk] nw/k&ngh vkfn ds lkFk vU; O;kikj&O;olk;ksa esa dykyh iV~Vk vkfn ij okf'kZd 'kqYd fy;k tkrk FkkA bu 'kqYdksa dks laxzg djus dk okf"kZd Bsdk izR;sd okf.kT;&O;kikj lewg ds izeq[k vk<+fr;ksa dks iznku dj fn;k tkrk FkkA jkT; dh vksj ls lg.kk vkSj <k.kh e.Mh esa jkT;fgrksa dks /;ku esa j[krs FksA buds }kjk e.Mh esa eky rqykbZ jkT; dh

nqdkuksa ds fdjk;s ij gVokM+k rFkk HkkMk ykxr izkIr dh tkrh FkhA[34]

bl iV~Vk&i)fr }kjk jkT; dk {kf=; okf.kT;&O;kikj ij izR;{k fu;a=.k jgrk FkkA eaMh O;oLFkk ij jkT; fu;a=.k ls O;kikjh euekus Hkko ugha c<k ldrs FksA ladV ds le; jkT; }kjk eaMh dh O;oLFkk jkT; Hk.Mkj ls dh tkrh Fkh vkSj eky dh deh gks tkus ij ckgj ls jkT; dh tekur ij eaxok;k tkrk FkkA[35] bl izdkj eaMh fu;a=.k dh O;oLFkk vk/kqfud fcØh&dj] vk;&dj rFkk okf.kT; dj ds dk;kZy; LFkkfir fd;s cxSj O;ofLFkr jgrh FkhA

vkarfjd O;kikj ,oa {ksf=; fu;a=.k

19+oha 'krkCnh ds iwokZ) rd esokM+ jkT; dk izR;sd tkxhj {ks= mijkT; ds :i esa vius {ks=k/khu okf.kT;&O;kikj ij fu;a=.k j[krh FkhA tkxhj ls eky ckgj ys tkus vFkok ykus ds fy, tkxhj&iz'kklu dh Lohd`fr ysuh iM+rh FkhA ejkBk vfrØe.k dky esa rks izR;sd tkxhj us futh pqaxh {ks= LFkkfir dj fn;s FksA vr% tkxhj pqaxh ?kjksa dks pqaxh nsus ds i'pkr gh O;kikjh tkxhj ls ckgj ;k vUnj eky vk;kr&fu;kZr dj ldrk FkkA dsUnz dks Hkh tkxhj {ks= ls eky&fudklh vFkok eaxokus ds fy, tkxhjnkjksa dks O;fDrxr i= fy[kus iM+rs FksA 19oha

'krkCnh ds mŸkjk)Z esa jk.kk 'kEHkw flag ds dky ls tkxhj pqaxh {ks= lekIr dj dsoy dsfUnz; pqaxh O;oLFkk dks ekU;rk iznku dh xbZ FkhA[36]

O;kikj ds izeq[k dsUnz

vkarfjd O;kikj ds fy, fuekZ.kk/khu {ks= esa mn;iqj] HkhyokMk] tgktiqj] NksVh lknMh vkfn izeq[k dsUnz jgs FksA[37] xkaoksa esa lkIrkfgd vFkok ekfld gBokMk yxk dj O;kikj fd;k tkrk FkkA ,sls gVokMk izR;sd 10&12 xkaoksa ds e/; yxk;s tkrs FksA[38]

vUrjkZT;h; O;kikj ds fy, esokM+ ls of.kd O;kikjh ny cuk dj Ø;&foØ; gsrq nwjLFk izns'kksa esa tkrs FksA[39] O;kikfjd ;k=k,a lnhZ ds i'pkr~ izkjEHk dh tkrh rFkk o"kkZ iwoZ lekIr gks tkrh FkhaA jk.kk txrflag rd jkT; dk okf.kT; O;kikj cgqr gh mUufr ij jgk FkkA fons'kh O;kikjh ,oa lkSnkxjksa }kjk esokM+ esa eky ys tk;k tkrk FkkA jkT; }kjk budh lqj{kk dk /;ku j[kk tkrk vkSj mUgsa iw.kZ lqfo/kk,a iznku dh tkrh FkhA[40] 18oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z ls 19oha 'krkCnh ds iwokZ) rd ds dky esa fons'kh O;kikfj;ksa ds dkfQyksa dk vkokxeu rRdkyhu jktuhfrd okrkoj.k vkSj yqVekj izo`fŸk;ksa ds Hk; ls de gks x;k Fkk fdUrq 'kfDr lEiUu

O;kikjh vius lSfud cy ij fofHkUu jkT;ksa esa eky ds foØ; gsrq ?kwers FksA lEiw.kZ dky O;kikj ,oa okf.kT; dh n`f"V ls BIi&dky jgk FkkA 1818 bZ- esa jkT; ds O;kikj fodkl gsrq duZy VkWM us dEiuh dks tekur ij dbZ fons'kh O;kikfj;ksa dks fof'k"V lqfo/kk,a iznku dj esokM esa clk;k FkkA[41] blls 'kuS% 'kuS% 19oha 'krh ds mŸkjk)Z i'pkr~ okf.kT; O;kikj xfr ysus yxk FkkA jkT; }kjk fons'kh O;kikfjd oLrqvksa ij yxus okyh pqafx;ksa dks 30 ls 50 izfr'kr ?kVk;k x;k rFkk lsB tksjkojey ckiuk dks jkT; dk vf/kdkj fn;k x;k FkkA[42]

jktiwrkuk ds t;iqj] dksVk] ikyh] iapHknzk] fljksgh] xqtjkr ds vgenkckn] lwjr cMkSnk] Hkqt] ikVu] dPN] mŸkj izkar ds fnYyh] cukjkl] vkxjk] dkuiqj] ekyok ds lkjxiqj] vka/kz ds vkSjaxkckn] ikfdLrku esa fLFkr eqYrku] iatkc o dk'ehj izns'kksa ls ek lkeku vk;kr fd;k tkrk Fkk rFkk egkjk"Vª] xqtjkr ds dbZ LFkkuksa jktiwrkusa esa vtesj] t;iqj] C;koj] ekok esa uhep vkfn LFkkuksa ij fu;kZr fd;k tkrk FkkA[43]

vk;kr&fu;kZr dh tkus okyh oLrq,¡

jkT; esa vQhe] dikl] rEckdw] fry] ljlks] ?kh] ydMh ds f[kykSus] dkals ds crZu ekse] 'kgn] yk[k vkfn ds

lkFk thfor HksMs] cdfj;ksa vkSj cdjs vU; jkT;ksa dks Hksts tkrs FksA vk;kr fd;s tkus okyh oLrqvksa esa t;iqj ls diMk] phu feV~Vh dk lkeku] [kkMlkjh] 'kDdj] ehukdkjh dk lkeku] lhlk] gkFkh nkar] tks/kiqj jkT; ds ikyh ls dEeys] [kkus dk lksMk] iapHknzk ls ued] fljksgh jkT; ls ryokjsa] Nqfj;ka] dVkjh] dksVk jkT; ls vukt] ca/kst ds diM+s] cwanh jkT; ls diM+s vkfn eaxok;s tkrs jgs FksA Hkkoyiqj ls dkap dk lkeku] lw[ks esos] ekyok ls lhlk] NhV ds diMs] frygu o rEckdq dk vk;kr fd;k tkrk FkkA xqtjkr jkT; ds ikVu ls js'keh oL=] lwjr vkSj cMkSnk ls lksuk&pkanh rFkk vU; tokgjkr] vgenkckn ls oL=] pkoy] cEcbZ ls ukfj;y] b= ,oa lqxaf/kr rsy] mŸkj izkar ds cukjl ls dke dh gqbZ tjnksth rFkk dlhns dh lkfM+;ka] dkuqij ls rsy] pkoy vkSj /kkrq ds crZu vkfn dk jkT; ds fy, Ø; fd;k tkrk FkkA cqjgkuiqj ls cgqewY; diMs] lkjxiqj ls ixfM;ka] vkSjaxkckn ls dqlqey dk diM+k] d'ehj ls Åuh oL=] eqYrku ls NhaV vkfn esokM+ esa yk;s tkrs FksA[44]

fdUrq 18oha 'krh ds i'pkr~ rd vk;kr vfHktkR; oxZ ds mi;ksx gsrq vko';drkuqlkj fd;k tkrk FkkA tulk/kkj.k ds miHkksx dk vf/kdrj lkeku jkT; esa

vkRefuHkZj&mRiknu }kjk iwfrZ dj fy;k tkrk FkkA ejkBk vfrØe.k ds izHkkfor vkaf'kd vk;kr&fu;kZr Hkh yxHkx cUn gks x;k FkkA 19oha 'krkCnh esa /khjs&/khjs O;kikj dh fLFkfr lq/kjus ds ifj.kkeLo:i cká jkT;ksa esa t;iqj] tks/kiqj] dksVk] cwanh] fczfV'k {ks= vtesj] dkuiqj] lwjr] cEcbZ vkn ls rkack] ihry] lksuk&pkanh] ukfj;y] dkap dk leku] nky] vukt] lw[ks esos] lhlk] eyey ds diM+s] js'ke ds diM+s] panu] 'kDdj] feV~Vh dk rsy] i'kqvksa esa ?kksMs] ÅaV] gkFkh] cSy] xk; vkn dk vk;kr vkSj dikl] rEckdq] vQhe] [kkys] ydM+h vkSj ydMh ds f[kykSus] fp=dkjh] tMkÅ vkHkw"k.k] dkals ds crZuksa dk fu;kZr fd;k tkus yxk FkkA[45]

18oha 'krh rd esokM+ esa vey dgh tkus okyh vQhe rFkk ued dk mRiknu jkT; dh vko';drk vuqlkj fd;k tkrk jgk FkkA fdUrq esokM esa bZLV bafM;k dEiuh ds e/; laj{k.k laf/k 1818 bZ- ds i'pkr~ dEiuh dk /;ku jkT; ds vQhe mRiknu dh vksj vxzlj gksus yxkA bldk eq[; dkj.k phu ds lkFk dEiuh dk vQhe&O;kikj jgk FkkA[46] dEiuh ljdkj ds v/kd`r Hkkjrh; izkUrksa ds vQhe&mRiknu rFkk O;kikj ij dEiuh dk vkfFkZd ,dkf/kdkfjd dEiuh O;kikj dks gkfu dh vk'kadk rFkk

jktiwrkus ls gksus okyh rLdjh ds izfr Hk; FkkA[47] vr% dEiuh us blh n`f"Vdks.k dks /;ku esa j[krs gq, 1825&26 bZ- esa esokM+ ljdkj ls ,d vkfFkZd le>kSrk fd;k ftlds vuqlkj 50 gtkj :i;k okf"kZd Bsds ij jkT; ds vQhe&O;kikj dk Bsdk dEiuh dks iznku fd;k x;kA[48] fdUrq esokM+ dh jktLo iz.kkyh us dEiuh ds mijksDr bsds esa gkfu dh fLFkfr mRiUu dj nh FkhA fdlku }kjk vQhe mRiknu dk lgh ewY;kadu ugha crk;k tkrk Fkk] bl izdkj 'ks"k NqikbZ xbZ vQhe dks Åaps Hkko esa rLdjh esa cspk tkrk FkkA blds vfrfjDr dksbZ Hkh O;kikjh vQhe dk Bsdk izkIr djus dks ykyf;r ugha jgrk Fkk D;ksafd esokM ls cEcbZ dk ekxZ ekyok vkSj xqtjkr gksdj tkrk Fkk tgka LFkku&LFkku ij O;kikfj;ksa dks pqaxh nsuh iM+rh FkhA[49] blds lkFk gh ;g ekxZ vR;f/kd yEck vkSj d"Vlk/; FkkA vr% dEiuh }kjk 1830 bZ- esa ykblsal nsus dk rjhdk viuk;k x;kA fQj Hkh dksbZ ykHk izkIr ugha gks ldkA blfy;s dEiuh us blds fu;kZr 'kqYd ij jkT; ls le>kSrk fd;kA jkT; ls ckgj tkus okyh vQhe ij bl le>kSrs ds vuqlkj 140 ikSaM ;k 63 fdyksxzke vQhe dh ,d isVhij 175 :- pqaxh 'kqYd deiuh ljdkj }kjk fy;k tkus yxk FkkA[50] ;g pqaxh 'kqYd 19oha

'krkCnh ds var rd phu dks Hksth tkus okyh vQhe ij izfr 63 fdyksxzke 600 :i;k fczfV'k Hkkjr esa foØ; gsrq fu;kZr dh tkus okyh vQhe ij 700 :i;k rd c<+k fn;k x;k FkkA

1668 bZ- rd fczfV'k Hkkjr dh rkt ljdkj us dEiuh ljdkj dh vQhe O;oLFfkk dks pyus fn;k FkkA fdUrq bl le; esa Mwaxjiqj] vgenkckn dh uohu vkSj cEcbZ tkus gsrq fudre ekxZ [kqy x;k FkkA vr% bl ekxZ ls vf/kd rLdjh dh lEHkkouk dks ns[krs gq, fpŸkkSM+ dk fMiks 1869 bZ- esa mn;iqj yk;k x;kA vey dk dkaVk LFkkfir dh xbZA bl pkSdh ij vQhe ykus rFkk ys tkus ij esokM ljdkj }kjk 20 izfr'kr ls 48 izfr'kr dh nj ls pqaxh olwy dh tkrh FkhA[51]

uoEcj 1883 bZ- esa ;g dkaVk iqu% mn;iqj ls fpŸkkSM+ LFkkukarfjr fd;k x;k D;ksafd mn;iqj vgenkckn ekxZ ij fofHkUu fBdkuksa ds Bkdqj rFkk Hkhyksa }kjk vyx ls <ksykbZ olwy dh tkrh FkhA vr% ;g vQhe cEcbZ ea caxkyh vQhe ls egaxh iM+rh FkhA fQj bl le; rd vtesj] ekyok jsy [kqy tkus ls vQhe dks jsy }kjk lqjf{kr cEcbZ igqapk;k tk ldrk FkkA jkT; ls vQhe dk vkSlr 1870 bZ- ls 1900 bZ- rd 3845 isVh FkkA

ftlesa 3602 isVh phu] 171 isVh fczfV'k Hkkjr esa Hksth xbZ vkSj 72 isVh pqaxh eqDr jkT; iz;ksx gsrq j[kh xbZ FkhA bl O;kikj }kjk fczfV'k Hkkjrh; ljdkj dh 35-4 yk[k ls 21-8 yk[k vkSlr pqaxh ykHk izkIr gqvk Fkk tcfd esokM ljdkj dks 3 yk[k ls 2 yk[k vkSlr pqaxh izkir gqbZ FkhA

vQhe ds vfrfjDr jkT;ko';drk ds vuqlkj LFkku&LFkku ij [kkj&ikuh ls ued cuk;k tkrk FkkA fczfV'k Hkkjr ljdkj vius vkfFkZd ykHk ds fy;s jktiwrkus ds leLr yo.k&mRiknd {ks= ij O;kikfjd fu;a=.k pkgrh FkhA[52] vr% 14 Qjojh 1878 dks ok;ljk; lfefr dk lnL; feLVj ,-lh- gkse vkSj esokM+ ds iksfyfVdy ,stsaV ys-duZy jk.kk lTtuflag ls jktuxj esa feys rFkk ued ds lEcU/k esa okrkZyki fd;kA[53] yxHkx ,d o"kZ rd yxkrkj fczfV'k ljdkj ds iz;Ruksa ds i'pkr~ 12 Qjojh 1879 bZ- dks fczfV'k Hkkjr ljdkj rFkk esokM+ ds e/; ued O;kikj dk le>kSrk fd;k x;kA[54] bl le>kSrs ds vuqlkj esokM jkT; esa ud cukus ij izfrcU/k yxk fn;k x;k rFkk ckg~; ,oa vkarfjd pqaxh vf/kdkj fczfV'k ljdkj esa lqjf{kr dj fy;kA vf/kdkjksa dh gkfu ds cnys esa 2900 o pqaxh gkfu dh iwfrZ gsrq 35000 :i;k fczfV'k ljdkj us esokM+ jkT; dks

nsuk Lohdkj fd;kA jk.kk ds futh O;; gsrq 1 gtkj eu ued rFkk jkT;&O;kikj gsrq 1]25]000 eu eu ;k iDdk 1@2 izfr'kr pqaxh Hkstuk eku fy;k x;k FkkA fdUrq 3&4 ekg esa gh fu%'kqYd rFkk v)Z 'kqyd ds ued dk esokM+ esa fu;kZr djus ds fglkch fnDdrksa ds dkj.k bl le>kSrs esa vkaf'kd ifjorZu fd;k x;kA blesa r; fd;k x;k fd fczfV'k ljdkj lEiw.kZ fu;kZr fd, x, ued dh pqaxh vkSj gkfu&iwfrZ gsrq 2004150 :i;k izfr o"kZ esokM+ jkT; dks fn;k tk;sxkA bl jkf'k ls 27000 :i;k tkxhjnkjksa dks izkIr gksxkA[55] bl izdkj jkT; dks vkenuh izkIr gksus yx xbZ fdUrq ued ewY; c<+rs jgus ls pqaxh ds :i esa O;kikjh vkSj Ø; dh n`f"V ls tulk/kkj.k dks gkfu gksus yxh FkhA bl izdkj O;kikfj;ksa }kjk ued O;kikj de dj fn;k x;k vkSj turk dks ued Åaps ewY;ksa ij feyus yxkA[56] vr% jk.kk us ued ds O;kikfj;ksa dks jkT; esa ued&Hk.Mkj rFkk O;kikj ds fy, lk/kkj.k C;kt ij vkfFkZd lgk;rk iznku dj O;kikfj;ksa dks ued O;kikj dh vksj izsfjr djrs gq, maps ewY; dks ?kVkus dk iz;kl fd;k vkSj blds lkFk gh jkT; esa vk;kr fd;s x;s ued ij esokM }kjk izkIr dh tkus okyh pqaxh lekIr dj nhA[57] turk dks ued lqyHkrk iwoZd miyC/k djkus ds fy;s izR;sd ijxus esa

jkT; dh vksj ls ued&fMiks izkjEHk fd;s x;sA bl izdkj ued ds c<+rs ewY; dks jksduk] O;kikfj;ksa dks ued O;kikj esa vkfFkZd lgk;rk rFkk tulk/kkj.k ds fy, jktdh; ued fMiks [kksy dj jk.kk }kjk ued forj.k dh lqO;oLFkk LFkkfir dh xbZ FkhA

le>kSrksa dk vkfFkZd ifj.kke

jkT; esa vQhe mRiknu dh izfØ;k vf/kd ls vf/kd ykHk vftZr djus gsq] gksrh pyh xbZ FkhA tgka 18oha 'krkCnh esa vQhe dh [ksrh dk izlkj ux.; Fkk ogha 19oha 'krkCnh esa fdlkuksa }kjk vf/kdrj vQhe dh [ksrh izkjEHk dj nh xbZ FkhA bl izdkj c<+rh gqbZ u'khyh [ksrh us jkT; esa vUu&mRiknu dh gkfu iznku djuk izkjEHk dj fn;k FkkA vUunkrk [ksr vQhe ls Hkj dj jkT; esa vUu vdky dh fLFkfr cukus yxs FksA[58] 1870 bZ- ds vdky esa jkT; ds vUu&HkaMkj rd [kkyh Fks tcfd jkT; ds Hkw&jktLo dk eq[; lk/ku vQhe FkkA vQhe dh [ksrh ds vizR;{k izHkko ls vukt&Hkko Hkh izHkkfor gq,] mnkgj.kkFkZ& tgka 18oha 'krkCnh ds ejkBk&vfrØe.k dky eas xsgw dk cktkj Hkko 7 lsj izfr :i;k gks x;k FkkA[59]

fczfV'k Hkkjr dh ljdkj }kjk 63 fdyksxzke vQhe ij 600 ls 700 :i;k olwy djuk vkSj esokM+ dks blds LFkku ij 48 izfr'kr pqaxh xzg.k djus dk vf/kdkj iznku djuk fczfV'k Hkkjrh; ljdkj dh vkfFkZd yksyqirk ,oa 'kks"k.k dks izdV djrk gSA esokM+ dh jktLo gkfu dk izek.kdj.k blls fd;k tk ldrk gS fd mls 48 izfr'kr pqaxh vk; esa fczfV'k Hkkjrh; ljdkj }kjk LFkkfir vey dh dksBh vkSj rqykbZ dkaVs dh O;oLFkk dk Hkkj Hkh ogu djuk iM+rk FkkA[60]

ued ds le>kSrs ds Qyr% jkT; esa ued cukus okys rks fcYdqy csdkj gks x;s FksA ued ykus&ystkus okyk cutkjk yksxksa ds thfodksiktZu dk eq[; lk/ku u"V gks x;k rFkk mUgsa thfodk ds vU; lk/ku <wa<uk iMsA ,d xkao ls nwljs xkao eky ykus&ys tkus ij xzke iapk;rksa }kjk ekik tkrk FkkA ;|fi nk.k vkSj fcLok dk vf/kdkj jk.kk dks gh Fkk fdUrq 18oha 'krkCnh ds dkykfrØe.k ds Qyr% fof'k"V ;ksX;rk iznf'kZr djus okyks dks {kf=; nk.k ds vf/kdkj iznku fd;s x;s FksA 1818 bZ- ds i'pkr~ bu vf/kdkjksa dks dsUnzkf/kd`r djus dk iz;Ru djrs gq, [kylk ,oa vU; {ks=ksa ds pwaxh dk Bsdk lsB tksjkojey ckQuk dks fn;k x;k FkkA lk;j ds

Bsdsnkjh dh ;g izFkk jk.kk Lo:iflag rd pyrh FkhA blds i'pkr~ Bsds dh lk;j O;oLFkk rksM dj LFkku&LFkku ij jkT; ds nk.kh&pkSrjs LFkkfir fd;s x;s Fks ftudh dqy la[;k 75 ls 80 ds yxHkx jgh FkhA jsy ykbu cu tkus ds i'pkr~ izR;sd jsYos LVs'kuij ,d nk.kh ?kj cuk;k x;k tgka jsYos ls Hksts tksu okys eky vFkok yk;s tkus ij pqaxh yh tkrh FkhA nk.kh ?kjksa esa fu;qDr nk.kh dks ekfld osru 4 :i;k vkSj 1 :i;k j[kk x;k Fkk tks fd 1920 bZ- esa 10 :i;k rFkk 6 :i;k c<+k;k x;k FkkA[61]

20oha 'krkCnh ds iwokZ) esa oLrq ds ewY;kuqlkj vk;kr 'kqYd fy;k tkus yxk ftls ckjhd ,oa cgqewY; diM+s ij izfr :i;k 1 vkuk eksVs diM+s ij nks iSlk rsy ij izfr e.k 20 :i;k] ?kh ij izfr e.k 10 :i;k] xqM&'kDdj ij izfr e.k 8 vkuk o 1 :i;k] Åu ij izfr :i;k 14 vkuk fy;k tkus yxk FkkA[62] bl fooj.k ls Li"V gksrk gS fd jkT; }kjk fu;kZr ls vf/kd vk;kr gksrk Fkk blhfy, vk;kr 'kqYd fu;kZr 'kqYd ls vf/kd fy;k tkrk FkkA 19oha lnh ds mŸkjk)Z ls yxkrkj vk;kr 'kqYd c,+rs&c<+rs 20oha 'krkCnh eas frxq.ks gks x;s FksA bldk eq[; dkj.k 1881&82 bZ- esa ued O;kikj ladV ds le; ls jkT; }kjk vQhe] rEckdq] egqvk] xkatk] diM+k] js'ke] [kkaM] dikl]

ydMh rFkk yksgs ds vfrfjDr vU; oLrqvksa ij pqaxh lekIr djuk FkkA[63] iq.;kFkZ /kekZFkZ yMdh ds fookg rFkk e`R;qHkkst esa iz;qDr dh tkus okyh oLrqvksa ij 'kqYd ekQ jgrh FkhA[64] jkT; esa vf/kd ls vf/kd vk;kr dks c<+kok nsus rFkk /kkfeZd ykHk izkIr djus dh n`f"V ls vk;kr eky dh dqy pqaxh dk 1@4 Hkkx ekQh nsus dh izFkk Hkh izpfyr jgh FkhA

mijksDr v/;;u ls Li"V gksrk gS fd jkT; esa m|ksx] okf.kT; rFkk O;kikj dh fLFkfr ejkBk vfrØe.k dky esa lqj{kk vHkko ds QyLo:i iYyfor ugha jgk ogka 19oha 'krkCnh esa lM+d ;krk;kr dh lqO;oLFkk ds vHkko esa fons'kh O;kikjh jkT; dh vksj vf/kd vkdf"kZr ugha gq, FksA ;|fi duZy VkWM us ckgj ls O;kikfj;ksa dks fueaf=r dj jkT; esa clus rFkk mUgsa pqaxh esa fj;k;r fnykus dk iz;Ru fd;k Fkk fdUrq bZLV bafM;k dEiuh vkSj ckn esa fczfV'k Hkkjr dh ljdkj }kjk vf/kd vkfFkZd ykHk vftZr djus dh izofŸk ds ifj.kker% esokM+ jkT; Hkh vkfFkZd mRiknu c<+kus vkSj O;kikj dks izJ; nsus ds izfr mnklhu jgk FkkA fQj jkT; dh vkRefuHkZj vkfFkZd O;oLFkk ds dkj.k vk;kr O;kikj dk fodkl vlaHko FkkA fu;kZr O;kikj ij dikl vkSj vQhe ds vfrfjDr 'ks"k ij

pqaxh dh njsZ Åaph rFkk dBksj fu;a=.k dh fLFkfr ds dkj.k bl {ks= esa Hkh izxfr ugha gks ldh FkhA 20oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z rd jkT; ds m|ksx okf.kT; ,oa O;kikj xzkE;&vkfFkZd O;oLFkkvksa eas fyIr jgs FksA

gqaMh ;k Vhi izFkk

okf.kT; O;kikj esa ysu&nsu dk vk/kkj ijEijk ls eqnzk vFkok oLrq fofu;e jgk FkkA fdUrq buds LFkku ij gqaMh vkSj Vhi }kjk Hkh O;kikfjd lkSns fd;s tkrs FksA 18oha 'krkCnh esa ,slh gqafM;ka jkT; dh tekur ij Hkqxrku dh tkrh FkhA[65] ejkBk&vfrØe.k dky eas rks jkT; dh nsunkfj;ka dks gqafM;ksa }kjk gh pqdk;k tkrk jgk FkkA[66] bl dky ea vf/kdrj gqafM;k iafMr lnkf'ko xksfoUnjko ek/kksth] f'kokth] j?kqukFk uk:th] xaxk/kj ckynso] cfgjthrk dih] >kyk tkfyeflag] rkykfe;k] lsB xksdqynkl 'kkg vkfn ds uke fy[kh gqbZ feyrh gS tks fd gqaMh dk :i;k jkT; vkSj O;fDr dh tehu&tk;nkn fxjoh j[k dj Hkqxrku djrs FksA ;g Hkqxrku&jkf'k fxjoh j[kh xbZ Hkwfe vFkok tk;nkn ds mRiUu vkSj mikZtu }kjk olwy fd;k tkrk FkkA[67] blh izdkj jkT; ds vkUrfjd ysu&nsu esa ^Vhi* ij :i;k fy;k vkSj fn;k tkrk FkkA[68]

LFkkuh; lsB lkgwdkj jkT; dh nqdkuksa rFkk eafnjksa ds /kekZf/kdkfj;ksa ds ikl :i;k tek djkus rFkk vko';drkuqlkj fudkyus ds fy, vk/kqfud cSad tSlh O;oLFkk izpfyr jgh FkhA tekdŸkkZ ,slh tek dh gqbZ dks Vhi fy[k dj nsrk FkkA ,slh Vhiksa esa jde vkSj C;kt vFkok ml jde dk iz;kstu fy[kk jgrk FkkA

cSafdax iz.kkyh ds :i esa m/kkj ysu&nsu dk O;olk; jkT; lsB lkgwdkj rFkk vkfFkZd lEiUu yksx djrs FksA ,slk ysu&nsu jkT;] O;fDr vFkok tk;nkn dh tekur ij fy;k tkrk FkkA ;fn ca/kd j[kh xbZ tk;nkn ij dksbZ vk; gksrh rks ewy jde dk C;kt ugha fy;k tkrk FkkA[69] fdUrq bl tk;nkn esa d`f"k Hkwfe lfEefyr ugha ekuh tkrh FkhA

C;kt dh nj

jkT; esa C;kt dh nj dk dksbZ fuf'pr fu;e ugha FkkA :i;k vkuk vFkkZr 1 :i;s ij 1 vkuk ls ,d :i;s ij 8 vkuk dh nj ij pØorhZ C;kt Hkh izpfyr jgk FkkA fdUrq lkgqdkjh C;kt izfr 100 :i;k 4 vkuk ls 12 vkuk ekgokj dgk tkrk FkkA[70] vf/kdrj C;kt dh olwyh Qly dVus ds le; rFkk m|ksxdfeZ;ksa ls mRiknu fcØh ds dky esa dh tkrh FkhA C;kt ysus&nsus dk <ax c<ksrjh ¼xq.kkad&pØorhZ½ ij vk/kkfjr jgrk FkkA blesa ewy

jde C;kt tksM+dj fy[kh tkrh Fkh rFkk C;kt ij C;kt p<+k;k tkrk FkkA bl C;kt iz.kkyh }kjk dtZnkj ges'kk dtZnkj cuk jgrk Fkk vkSj og lkgwdkj ds paxqy ls ih<+h nj ih<+h Lora= ugha gks ikrk FkkA 20oha 'krkCh rd dtZnkjh ds okrkoj.k esa tkxhjnkjksa }kjk viuh tkxhjsa rd ca/kd j[kh tkus yxh FkhA vr% bl dyad dks lekIr djus ds fy, tkxhj ca/kd j[kus ij jksd yxk dj vkns'k izlkfjr fd;s x;s FksA[71]

eqnzk vkSj eki rksy

okf.kT; O;kikj dks cuk;s j[kus rFkk jkT; ds ysu&nsu dk ek/;e flDdk Fkk fdUrq vk/kqfud dky ds tSls lEiw.kZ vkfFkZd thou dk O;ogkj ek= flDdksa ij vk/kkfjr ugha jgk FkkA jkT; deZpkfj;ksa] lsodksa rFkk nklksa dks vf/kdrj vUu vkfn ds lkFk&lkFk uke ek= ds flDds fn;s tkrs FksA lk/kkj.k turk esa ysu&nsu dk vk/kkj oLrq&fofue; jgk FkkA bl izdkj flDdk O;kikj ,oa ckg~; ysu&nsu dk eq[; ek/;e jgk FkkA vc fd vkarfjd O;kikj esa izpfyr eqnzk ds lkFk&lkFk eqnzk ds ewY;kadu ls ewY;kafdr dkSfM;ksa dk izpyu 19oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z rd izpfyr jgkA[72]

18oha 'krkCnh ds iwoZ esa jkT; dh VDlky fpŸkkSM+ esa fo|eku FkhA[73] fpŸkkSM+ dh VDlky ls izFker% vdcj ds uke ls flDds <kys x;s FksA ;g flDds eqxy ckn'kkg tgkaxhj ls vkSjaxtsc rd izR;sd ckn'kkgksa ds ukeksa esa ifjofrZr dj fn;s tkrs jgs FksA[74] bu flDdksa dks flDdk ,yp dgk tkrk FkkA vkSjaxtsc ds ejus ds i'pkr eqxy lkezkT; fucZy gksus yxk FkkA vr% jktiwrkus ds vU; jkT;ksa dh rjg esokM+ esa Hkh esokM jkT; ds flDds <kyus gsrq fpŸkkSM+ dh VDlky ds lkFk lkFk fo-la- 1770 esa Q:[kf'k;j ds }kjk mn;iqj esa ,d vU; VDlky [kksyh xbZA bl VDlky esa lqukj rFkk dlkjk tkfr ds O;fDr;ksa dh fu;qDr fd;k x;kA mejMk uked xkao esa pkanh vkSj rkacs ds flDds <ky dj jkT; dks iznku djrs FksA HkhyokM+k dh VDlky 17oha 'krkCnh iwoZ esa LFkkuh; okf.kT; O;kikj ds ysu&nsu gsrq HkhyokM+h flDds <kyrh FkhA

18oha 'krkCnh esa HkhyokM+k ds flDds Hkh izpfyr jgs FksA mijksDr rhuksa Vdlkyh ls <yus okys flDdksa ij 'kkg vkye dk uke [kqnk jgrk FkkA bl dkj.k bUgs vkye'kkgh flDds Hkh dgk tkrk FkkA[75]

eki rksy

jkT; ds eki&rksy dk vk/kkj ijEijk ls pyh vk jgh ifjekiu iz.kkyh jgk FkkA bu ifjeki.kksa esa xgjkbZ ukius ds fy, lk/kkj.kr% O;fDr ds vaxqyh] ?kqVus] vkneh dh yEckbZ] gkFkh dh ÅapkbZ vkfn dh vuqekfur iz.kkyh iz;ksx esa ykbZ tkrh FkhA[76] nwjh ukius ds fy, NksVh bdkbZ iko.Mk FkhA iko.Mk rFkk vaxqy dk varj Kkr ugha gksus ds dkj.k ge ;gka vaxqy dh bdkbZ ls ekius dh iz.kkyh tks fd esokM+ esa 19oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z esa izpfyr jgh FkhA[77]

28 vaxqy = 1 gkFk

84 gkFk = 1 Mksjh

50 Mksjh = 1 dkslh ¼2 ehy½

cgqewY;] lw{e rFkk vkS"kf/k vkfn rksyus ds fy, 5 eqax = 1 jfŸk] 8 jfr = 1 ek'kk o 12 ek'kk = 1 rksyk ls oLrq otu fd;k tkrk FkkA 80 rksyk = ,d NVkd iDdk vFkok 100 rksyk = 1 NVkad dPpk ds vuqlkj Hkkjh otu dks rksyus ds fy, fuEu ifjekiu fo|eku FksA[78]

16 NVkd caxkyh = 1 iko = 80 rksyk

20 NVkd dPpk = 1 iko = 100 rksyk

2 iko = 1 v/klsj

2 v/klsj = 1 lsj

5 lsj = 1 /kMh rkdMh

4 /kMh = 1 eu dPpk

12 eu = 1 ek.kh[79]

fglkc&fdrkc djus gsrq :i;s&iSlksa ds pkj Hkkx dk izpyu jgk FkkA mnkgj.kkFkZ iko 1@4] vk/kk 1@2] iw.kZ 1@3 rFkk iwjk 1 ftUgs lkadsfrd vFkZ esa 1] 2] 3 fy[kk tkrk FkkA iw.kZ bdkbZ ds i'pkr~ va'k bdkbZ fy[kus ds fy, eki esa 5 fpUg rFkk :i;s&iSlk esa 0 fpUg dk iz;ksx gksrk FkkA[80]

lapkj O;oLFkk

O;kikj&okf.kT; ds lanHkZ esa lapkj O;oLFkk dk voyksdu djuk vko';d gks tkrk gSA D;ksafd okf.kT; O;kikj ds lkFk gh lkekftd lEcU/kksa dks cuk;s j[kus rFkk vU; LFkkuksa dh ?kVuk fooj.k tkuus dh ekuo&mRlqdrk dh rqf"V lapkj lk/kuksa }kjk gks ldrh gSA 18 oha lnh ds esokM+ esa lekpkjksa dk vknku&iznku djus ds fy, vk/kqfud Mkd&O;oLFkk tSlh dksbZ iz.kkyh fo|eku ugha FkhA tu lk/kkj.k esa tkfr;ksa ds vius&vius ukbZ lsod] pkj.k ;k HkkV gh

ikfjokfjd lans'kksa dks b/kj&m/kj ys tkrs FksA ,slh lans'k izfØ;k vf/kdrj ekSf[kd gksrh FkhA jkT; dk;Z ds fy, iSny ftUgsa fd nkSMk;r] ÅaV lokj lkMh rFkk ?kqMlokj j[ks tkrs Fks tks jkT; lwpukvksa vkSj okrkZvksa dks ekSf[kd :i esa b/kj&m/kj igqapkrs FksA ekSf[kd Mkd O;oLFkk ds izpyu ds i`"B esa rRdkyhu vjktd jktuhfrd okrkoj.k dh fLFkfr mŸkjnk;h dgk tk ldrk gSA 19oha 'krkCnh ds iwokZ) rd mijksDr :f<xr O;oLFkk esa cXxh }kjk Mkd ykus ys tkus dh uohu O;oLFkk izkjEHk dh xbZA bl le; rd fyf[kr lwpuk Hkstus dk izpyu izkjEHk gks x;k FkkA fdUrq jk.kk Lo:iflag ds 'kklu dky rd tu lk/kkj.k dh lwpuk fofue; dh dksbZ jkT; O;oLFkk ugha FkhA ;|fi mDr jk.kk us fu;fer jktdh; Mkd ykus ys tkus gsrq ^cke.kh* Mkd uked O;oLFkk izkjEHk dj nh FkhA[81]

cke.kh Mkd O;oLFkk

;g O;oLFkk lEHkor% caxky esa izpfyr gjdkjk Mkd O;oLFkk ls izHkkfor gksdj jkT; esa izpfyr dh xbZ FkhA bldk uke cke.kh&Mkd D;ksa j[kk x;k\ bldk dksbZ Li"V dkj.k mYysf[kr ugha feyrk gSA fdUrq esokM+ jkT; esa czkã.k ds izfr vknj vkSj n;k Hkko dh

yksd vfHk/kkj.kk ls izsfjr bl O;oLFkk ds izfr vknj vkSj n;k Hkko dh yksd vfHk/kkj.kk ls izsfjr bl O;oLFkk esa czkã.kksa dks j[kk tkuk gh laHkkfor dkj.k dgk tk ldrk gSA czkã.k yksxksa dks ekjuk ;k yqVuk iki dk;Z ekus tkus dh fLFkfr esa buds }kjk :i;k&iSlk ,oa fpV~Bh i=h Hkstuk vU; tkfr;ksa dh vis{kk vf/kd lqjf{kr jgrk Fkk blfy, Hkh czkã.k dks bl O;oLFkk dk mŸkjnkf;Ro iznku djuk f}rh; dkj.k ekuk tk ldrk gSA bl Mkd O;oLFkk dks jk.kk 'kEHkwflag ds 'kklu dky esa tu&lk/kkj.k ds mi;ksx gsrq [kksy fn;k x;k FkkA bl O;oLFkk esa czkã.kksa dks okf"kZd Mkd Bsdk iznku fd;k tkrk FkkA lu~ 1873 bZ- esa ;g Bsdk 1920 :i;k esa iznku fd;k x;k FkkA[82] ;fn Bsdsnkj dks blesa ?kkVk ;k gkfu gksrh rks jkT; dh vksj ls mls bldh iwfrZ gsrq vkfFkZd vuqnku fn;k tkrk FkkA 20 'krkCnh ds iwokZ) rd bl O;oLFkk dk okf"kZd O;; 12000 :i;k jgk FkkA[83] Mkd dk Bsdk ysus okyk O;fDr dks Mkd O;oLFkk cuk;s j[kus ds fy, Lo;a ds gjjdkj j[kus iM+rs FksA 19oha 'krkCnh ds mŸkjk)Z esa bl Mkd O;oLFkk ds varxZr 60 gjdkj dk;Z djrs Fks] ftudk ekfld osru 4 :i;k FkkA tu lk/kkj.k ls izfr i= 2 iSlk fy;k tkrk Fkk ftldk ifj{ks= esokM+ jkT; FkkA fdUrq ckgj

Hksth tkus okyh Mkd ij vyx ls izfr dksl dh nwjh ij iSlk fy;k tkrk FkkA

20oha 'krkCnh ds ,d n'kd rd cke.kh Mkd fu;fer :i ls izR;sd ijxuk ds eq[;ky; rd tkrh FkhA bl Mkd O;oLFkk ds fy, dksbZ Mkd?kj ugha Fks vfirq Bsdsnkj dk ?kj ,oa gjdkjs yksx pyrs&fQjrs Mkd ?kj FksA

vkaXy ljdkj us 1865 bZ- esa gh jkT; dh jsthMsUlh ij Mkd&/kj LFkkfir dj fn;k FkkA blds lkFk gh ulhjkckn lsjokMk] dksVMk Nkouh ij Nkouh ds Mkd&?kj [kqys gq, FksA fdUrq buesa fczfV'k Hkkjr ljdkj ,tsaVksa rFkk jkT; deZpkfj;ksa ds lekpkj vkrs&tkrs FksA jsyos ykbu [kqy tkus ds i'pkr~ izR;sd jsy LVs'ku ij vkaXy iz'kklu ds ,d&,d Mkd?kj rFkk rkj ?kj tulk/kkj.k ds mi;ksx gsrq [kksy fn;s FksA 19oha 'krkCnh ds var rd tulk/kkj.k dh lwpuk fu;fer rFkk O;ofLFkr :i ls vkus&tkus yx xbZ FkhA bl izdkj 20 dh lnh ds izFke n'kd rd vkaXy i)fr ij dk;Z djus okys Mkd?kj rFkk rkj?kj dh la[;k Øe'k% 36 rFkk 20 jgh FkhA ;g lsok,a jkT; rFkk tulk/kkj.k ds fy, iw.kZr% [qkyh gqbZ FkhA

lanHkZ

1 गोपिनाथ शर्मा, सोशल लाइफ इन मेडिवल राजस्थान, पृ. 302

2 श्यामलदास, वीर विनोद, पृ. 108–109

3 हेडले, ए मेडिको टोपोग्राफिकल एकाउन्ट ऑफ जयपुर, पृ. 2

4 esokM+ jthMsUlh] i`- 49&50

5 nz"VO; & tkfr;ka ,oa O;olk; v/;;uA

6 प्रयाग दास, कपड़ा कुतुहल दोहा सं. 20

7 दस्तूर कौमवार वोल्यूम 23, एफ. 393, जयपुर रिकोड्स।

8 xtsfV;j fjiksVZ vkWQ esokM+] i`- 5&6

9 esokM+ jsthMsUlh] i`- 55

10 mUuloha lnh ds jktLFkku dk lkekftd vkSj vkfFkZd thou] i`- 180

11 लाला मूलराज, नोट्स ऑन दी फौरेस्ट्स ऑफ दी बाँसवाड़ा स्टेट (1907), पृ. 23

12 uksV~l vkWu nh QksjsLV vkWQ nh ckalokM+k LVsV] 1907] i`- 23] bEihfj;y xtsfV;j vkWQ izksfoafl;y fljht] i`- 203] 267

13 डॉ. कैलाशनाथ व्यास, देवेन्द्र सिंह गहलोत, राजस्थान की जातियों का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, पृ. 218

14 सवा मण्डी–सदर बही नं. 8 वि.सं. 1815–16, बीकानेर रिकोड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

15 पेडार नं. 10, बस्ता नं. 33, वि.सं. 1868, कोटा रिकोड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

16 दस्तूर कौमवार वोल्यूम 23, एफ. 414, जयपुर रिकोड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

17 पेडार नं. 8, जकात बही, परगना जहाजपुर, वि.सं. 1874, कोटा रिकोड्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

18 वाराणसी विलास, अप्रकाशित, पृ. 7, मेवाड रेजीडेन्सी, पृ. 55

19 वाराणसी विलास, अप्रकाशित, पृ. 7, मेवाड रेजीडेन्सी, पृ. 57

20 डॉ. जयसिंह नीरज, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. 222

[21] कोतवाली चबूतरा जमाबंदी बही नं. 753, परगना जालौर, वि.सं. 1833, जोधपुर जिला अभिलेखागार, जोधपुर।

[22] वही, जोधपुर विला अभिलेखागार, जोधपुर।

[23] पेडार नं. 20, बस्ता नं. 10, वि.सं. 1890, (1833 ई.) कोटा रिकोडर्स, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर।

[24] इम्पीरियल गजेटियर ऑफ प्रोविंसि;y fljht] i`- 203] 267

[25] esokM+ jsthMsUlh] i`- 55

[26] okjk.klh foykl] i`- 7&8]

[27] esokM+ jsthMsUlh] i`- 55

[28] xtsfV;j fjiksVZ vkWQ esokM] vizdkf'kr] i`- 139

[29] tuZy vkWQ fn jktLFkku baLVhV~;wV vkWQ fgLVksjhdy fjlpZ] ua- 7] tqykbZ&vxLr] 1971] i`- 39&40

[30] jktiwrkus ,tsalh fjdkMZ esokM+] i`- 1892&1894A vkfFkZd izfrLi/kkZ dh Hkkouk lekt rFkk jkT; }kjk yksdkpkj rFkk tkfr fu;eksa ls fu;af=r gksrh FkhA

[31] jktLFkku foyst] i`- 89&90

[32] vk/kqfud dky esa Hkh mn;iqj laHkkx ds xzkeh.k {ks=ksa esa oLrqfofue; }kjk ysu&nsu dh ijEijk ns[kh tk ldrh gSA

[33] esgrk laxzkeflag DysD'ku] QkbZy 269] cLrk 19

[34] vken&tek cgh] fo-la- 1913] cgh fo-la- 1924

[35] esgrk 'ksjflag dk i=] 20 twu 1849 rFkk vU; i= cLrk 13

[36] esgrk laxzke flag DysD'ku] fo-la- 1893] dh cgh] cLrk 1] V$aSoYl bu lsaV$ay bafM;k] i`- 138

[37] xtsfV;j fjiksVZ vkWQ esokM] gLrfyf[kr izfr] i`- 141

[38] euksjFkoYyjh i= 194] 'kkgiqjk jkT; dh [;kr [kaM 3] i`- 63

[39] ckjkeklh jk nwgk] gLrfyf[kr izfr] i= 153] chtk lksjB jh ckr] gLrfyf[kr izfr] i= 49

[40] jk.kk vejflag f}rh; dk fo-la- 1755 lqnh 5 dk iokZuk] i`- 2202

[41] esokM jsthMsUlh] i`- 55

[42] mijksDr] i`- 561

[43] xtsfV;j fjiksVZ vkWQ esokM] gLrfyf[kr izfr] i`- 140&141

[44] HkhyokM+k ls eksgu jke nqjxknkl dk t;iqj ds 'kkg thojkt eksgu jke dks fo-la- 1824 dk i=] esgrk laxzke flag DysD'ku] QkbZy 70&74] cLrk 4

[45] xtsfV;j fjiksVZ vkWQ esokM] gLrfyf[kr izfr] i`- 139&140

[46] jes'knŸk] nh bdkuksfed fgLVªh vkWQ bf.M;k] Hkkx&2] i`- 73

[47] caxky&fcgkj rFkk mŸkj izkUr ;gka dh vQhe dks caxkyh&vQhe dgk tkrk FkkA

[48] esokM+ izrkix<+ Mwaxjiqj] ckalokM+k] >kykokM] dksVk] cwanh vkSj Vksad & ;gka dh vQhe ekyoh vQhe dgykrh FkhA] iwoZ vk/kqfufd jktLFkku] i`- 276&277

[49] nh bdksuksfed fgLVªh vkWQ bafM;k] Hkkx&2] i`- 73

[50] , fMD'kujh vkWQ bdksuksfed izksMDVl vkWQ bafM:k] [k.M&6] 1892] i`- 94

[51] esokM+ jtsMsUlh] i`- 75

[52] esokM+ esa [kkjh unh ls mn;iqj ds e/; rd ued cuk;k tkrk FkkA rkykc ds D;kjh esa ikuh Hkj dj lq[kk;k tkus ij ^[kkj dh ijr cu tkrh FkhA ;g ued ^[kkjh dgykrk FkkA mn;iqj laHkko esa ikuh ds yo.k ek=k dk vuqeku ikuh Hkjs gq, ckYVh] lqjkgh o vU; crZuksa ij tes yo.k ls vkadh tk ldrh gSA ;g teko 24 ?kaVs esa cu tkrk gSA

[53] nh bdksuksfed fgLVªh vkWQ bafM;k] Hkkx&2] i`- 393&394

[54] fVªVht&,xsatesaV [k.M&3] i`- 38] 39

[55] esokM jsthMsUlh] i`- 75&76

[56] esokM+ dk jkT;&izcU/k] i`- 82

[57] esokM+ jsthMsUlh] i`- 29

58 esokM+ jsthMsUlh fjiksVZ] 1880&81

59 i`Fohflag esgrk] gekjk jktLFkku] i`- 227

60 jktiwrkuk ,MfefuLVsªfVo fjiksVZ 1870 bZ- i`- 2094&95

61 nk.k dLVe Qkby cLrk 1 ,oa 2

62 VsjhQ eglwynk.k jkT; mn;iqj esokM+] lu~ 1922&1923 bZ-A

63 esokM+ dk jkT; izcU/ku] i`- 82

64 esgrk laxzke flag DysD'ku] QkbZy 61] cLrk 3

65 'kkgiqjk jkT; dh [;kr] [k.M&2] i`- 122&23

66 ukFkwyky O;kl laxzg] jftLVj ua- 2] i`- 238&241

67 lysD'ku ÝkWe cusMk vkdkZbZCt Hkkx&2] i= 27

68 jkT;kf/kdkfj;ksa o deZpkfj;ksa dh ;k=k ds le; ;k ekfld dPph ;k iDdh Vhi nh tkrh Fkh ftlds vk/kkj ij fdjk.kk O;kikjh lkeku iznku djrk Fkk & ukFkwyky O;kl laxzg] jftLVj ua- 1] i`- 7

69 ukFkwyky O;kl laxzg] jftLVj ua- 1] i`- 8

70 esgrk laxzke flag DysD'ku Qkby 169] cLrk 12

71 ljD;wyj jftLVj LVsV egdek Hkkx 1] i`- 227&247

72 esokM esa 20 Hkkxksa ds ifj.kke vf/kd izpfyr jgsA blds vuqlkj vuqeku fd;k tk ldrk gS fd 20 Hkkx nke = 1 :i;k jgk gksxkA

73 jktiwrkus ds flDds] vuqokn ,oa lEiknd ekaxhyky O;kl] i`- 11

74 esokM dk jkT; izcU/k] i`+- 26

75 fo-la- 1811 dk jgu ukek&udy cgh] cLrk 5] jktiwrkuk ds flDds] i`- 27

76 ,d vaxqy +rhu fcLok gksrk FkkA blh izdkj 5 =+ 1 ckfyLr] 5 ckfyLr =+ + ,d ?kksMk] 2 ?kksMk =++ 1 vkneh 2 vkneh dk ,d gkFkh vkadk tkrk jgk FkkA

77 Dok;nk ekQh fj;klr esokM+] i`- 12

78 iDdk rksy dk vFkZ fczfV'k Hkkjr ljdkj ds ekud rFkk dPps dk vFkZ esokM jkT; ds ekud rksy ls fy;k tkrk FkkA esokM dk jkT; izcU/ku] i`- 101

79 dPpk lsj 50 = iDdk lsj 40 = dk ,d eu gksrk gSA

80 MkW- n'kjFk T;ksfr iqLrdky;] chdkusj laxzfgr fo-la- 1865 ¼1808 bZ-½ Hkknok ofn 9 fo-la- 1877 vk"kk< lqfn 9 ds ijokus O;kikfjd i= eky okguksa vFkok ;kf=;ksa ds lkFk Hksts tkrs FksA

81 nsoLFkku fjdkMZ] jktLFkku jkT; vfHkys[kkxkj] esokM dk jkT; izcU/ku] i`- 99

82 esokM dk jkT; izcU/ku] i`- 99

83 esokM jsthMsUlh] i`- 59